

जिनचन्द्र सूरी की 86०वीं स्वगारीहण जयंती मनाई

कल्पसूत्र प्रवचन में साधु आचार, प्रतिक्रमण और पर्युषण कल्प की व्याख्या

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com
बेंगलुरु, 10 सितंबर 2026। श्री जिन कुशल सूरी जैन दादावाड़ी ट्रस्ट,



बसवनगुडी के तत्वावधान में चातुर्मास के लिए विराजित पूज्य गुरुदेव मलयप्रभ सागर जी एवं साध्वी श्री डॉ. प्रियश्रद्धांजना श्री जी म. सा. की निश्रा में द्वितीय दादा गुरुदेव मणिधारी श्री जिनचन्द्र सूरी जी की 86०वीं स्वगारीहण जयंती श्रद्धापूर्वक मनाई गई। इस अवसर पर गुरुदेव के जीवन और जिनशासन में

उनके योगदान का गुणानुवाद किया गया। पर्युषण महापर्व के तृतीय दिवस आयोजित कल्पसूत्र प्रवचन में गुरुदेव मलयप्रभ सागर जी ने कहा कि भगवान

11 कल्पों के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डाला। उन्होंने अचेलक कल्प के अंतर्गत साधुओं के वस्त्र संबंधी आचार, जबकि औद्देशिक कल्प में साधु-साध्वियों के

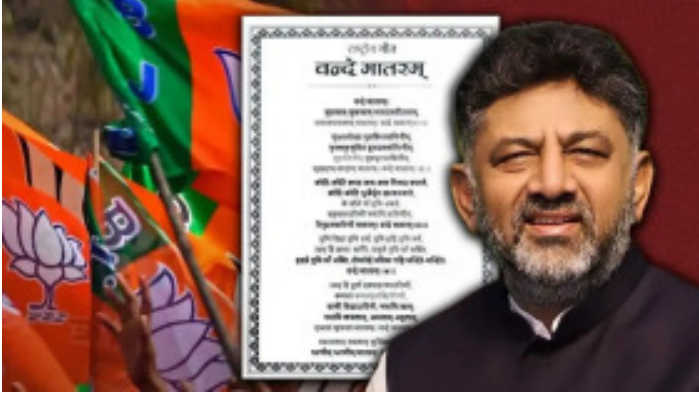


निमित्त आहार तैयार न करने तथा निमित्त का आहार ग्रहण न करने की परंपरा की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि भगवान को आदिनाथ और भगवान महावीर के समय के साधुओं का आचार एक प्रकार का था, जबकि शेष 22 तीर्थंकरों के समय साधुओं के आचार में भी समानता रही। गुरुदेव ने स्पष्ट किया कि परमात्मा रागी

बताया गया कि साधु-साध्वियों के निमित्त उपाश्रय नहीं बनाए जाते। उन्होंने क हा कि पूर्वकाल में उपाश्रय को पौषघशाला कहा जाता था, जिसका निर्माण श्रावकों के लिए किया जाता था। इसी क्रम में राजपिंड, दीक्षा पर्याय कल्प, वंदन व्यवहार और प्रतिक्रमण व्यवहार कल्प की भी विस्तृत जानकारी

वंदे मातरम पर कर्नाटक में घमासान, दो अंतरों के आदेश से BJP-कांग्रेस आमने-सामने

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com
बेंगलुरु, 10 सितंबर 2026। राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम् के गायन को लेकर कर्नाटक में कांग्रेस सरकार और भाजपा के बीच राजनीतिक टकराव तेज हो गया है। कर्नाटक सरकार ने राज्य सरकार के अधिकांश आधिकारिक कार्यक्रमों में वंदे मातरम् के पूर्ण संस्करण के बजाय केवल पहले दो अंतेरे गाने का निर्देश दिया है। हालांकि, राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और राज्यपाल की मौजूदगी वाले कार्यक्रमों को इस व्यवस्था से अलग रखा गया है। सरकार के इस फैसले को लेकर भाजपा ने कड़ा विरोध जताते हुए इसे संसद के निर्णव और संवैधानिक मयार्दा से जोड़कर सवाल उठाए हैं। वहीं, कांग्रेस अपने रुख को वर्ष 1937 में पार्टी द्वारा लिए गए ऐतिहासिक निर्णव से जोड़ रही है। मंत्रिमंडल के फैसले के बाद जारी हुआ आदेश राज्य सरकार के आदेश में कहा गया है कि भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान वंदे मातरम् ने राष्ट्रवाद, एकता और देशभक्ति की भावना को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। केंद्र सरकार के मंत्र मंत्रालय ने भी राष्ट्रीय गीत के आधिकारिक संस्करण तथा सरकारी और सार्वजनिक समारोहों में इसके गायन-वादन को लेकर दिशानिर्देश जारी किए हैं। इसी संदर्भ में कर्नाटक मंत्रिमंडल के निर्णव के आधार पर कार्मिक एवं प्रशासनिक सुधार विभाग की ओर से निर्देश जारी किए गए हैं। आदेश के अनुसार, राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और राज्यपाल की उपस्थिति वाले कार्यक्रमों को छोड़कर अन्य राज्य सरकारी कार्यक्रमों में वंदे मातरम् के पहले



का कहना है कि पार्टी के कार्यक्रमों में वंदे मातरम् के पहले दो अंतेरे गाने की परंपरा उसी ऐतिहासिक निर्णव के अनुरूप है। इससे पहले केपीसीसी अध्यक्ष बी.के. हरिप्रसाद भी वंदे मातरम् के सभी छह अंतेरे गाए जाने पर आपत्ति जता चुके हैं। कांग्रेस नेतृत्व का तर्क है कि गीत के बाद के हिस्सों में धार्मिक प्रतीकों का उल्लेख होने के कारण स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान एक व्यापक सहमति के तहत पहले दो अंतरेों को प्रार्थमिकता दी गई थी। भाजपा ने सरकार पर साधा निशाना कर्नाटक सरकार के आदेश के बाद भाजपा ने लिखित बयान जारी कर कांग्रेस सरकार पर हमला बोला। भाजपा ने आरोप लगाया कि संसद के निर्णव के बावजूद राज्य सरकार अलग रुख

अपनाकर संवैधानिक मयार्दा को चुनौती दे रही है। भाजपा ने सवाल उठाया कि वंदे मातरम् के बाकी अंतरेों से कांग्रेस को आपत्ति क्यों है। पार्टी ने कहा कि राष्ट्रहित से जुड़े विषयों पर संसद द्वारा लिए गए निर्णवों का सम्मान किया जाना चाहिए।

रुख ऐतिहासिक निर्णव से जुड़ा है और उन्होंने वही संस्करण गाया जिसे महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल और अन्य प्रमुख नेताओं की परंपरा से जोड़ा जाता है। गीत के इतिहास को लेकर भी जारी है बहस वंदे मातरम् की रचना बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय ने अपने उपन्यास आनंदमठ में की थी। इसे राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान व्यापक लोकप्रियता मिली। 1896 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन ने रवींद्रनाथ टैगोर द्वारा इसके गायन का उल्लेख मिलता है। बाद के वर्षों में गीत के कुछ हिस्सों में धार्मिक प्रतीकों के उल्लेख को लेकर आपत्तियां भी सामने आईं। वर्ष 1937 में कांग्रेस कार्यसमिति ने गीत के पहले दो हिस्सों के उपयोग को लेकर निर्णय लिया था। इसी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को कांग्रेस आज अपने रुख के समर्थन में प्रस्तुत करती है। विवाद का केंद्र राष्ट्रीय का सम्मान और राजनीतिक नीति कर्नाटक में मौजूदा विवाद अब केवल दो अंतरे या छह अंतरे गाने तक सीमित नहीं रहा है। इसके केंद्र में राष्ट्रीय प्रतीकों के सम्मान, ऐतिहासिक निर्णवों की व्याख्या और क्या यह सभी रण्यों एवं सरकारी कार्यक्रमों में समान रूप से लागू होता है। खरोगे के बयान से भी गरमाया था मुवा वंदे मातरम् को लेकर कांग्रेस और भाजपा के बीच राजनीतिक बयानबाजी इससे पहले भी सामने आ चुकी है। अगस्त में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरोगे के एक कार्यक्रम में वंदे मातरम् के पहले दो अंतरेों के गायन को लेकर भाजपा ने सवाल उठाए थे। खरोगे ने अपने बचाव में कहा था कि कांग्रेस का

मायशुगर किसानों को राहत: गन्ने के अंतिम भुगतान की प्रक्रिया शुरू



भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com
मांढ्या, 10 सितंबर 2026। मांढ्या जिले की ऐतिहासिक मायशुगर चीनी मिल को गन्ना आपूर्ति करने वाले किसानों के लिए राहत की खबर है। किसानों को गन्ने की आपूर्ति का अंतिम भुगतान उपलब्ध कराने की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। जल संसाधन मंत्री एन. चलुवरायस्वामी ने गुरुवार को प्रतीकात्मक रूप से सात किसानों को अंतिम भुगतान के चेक वितरित किए। शेष किसानों के खातों में भुगतान सीधे डायरेक्ट बेंचिफिट ट्रांसफर (DBT) के माध्यम से भेजने की व्यवस्था की गई है। मंत्रों के अनुसार, इस पहल का उद्देश्य किसानों को भुगतान के लिए सरकारी कार्यालयों के चक्कर लगाने से बचना और राशि सीधे उनके बैंक खातों तक पहुंचाना है। भुगतान प्रक्रिया शुरू होने से मायशुगर को गन्ना आपूर्ति करने वाले किसानों में संतोष का माहौल है। सरकारी

स्वामित्व में कायम रही मायशुगर मायशुगर मांढ्या जिले के किसानों के लिए लंबे समय से महत्वपूर्ण चीनी मिल रही है। मिल के संचालन को लेकर पिछले वर्षों में वित्तीय और प्रबंधन संबंधी चुनौतियां सामने आई थीं। इसके चलते मिल के भविष्य और निजीकरण को लेकर भी किसानों के बीच चिंता रही। कांग्रेस की ओर से जारी जानकारी के मुताबिक, किसानों की मांग और हितों को ध्यान में रखते हुए मिल को सरकारी स्वामित्व में बनाए रखने पर जोर दिया गया। मिल के पुनरुद्धार, आवश्यक वित्तीय संसाधनों की व्यवस्था और पुराने मशीनरी को दुरुस्त कर उत्पादन शुरू करने के प्रयासों को भी इसी क्रम से जोड़ा गया है। हालांकि, इन दावों से जुड़े प्रशासनिक और वित्तीय निर्णवों का अंतिम आकलन संबंधित सरकारी दस्तावेजों और आधिकारिक रिकॉर्ड के आधार पर किया जाना उचित होगा। 5 हजार किसानों ने की गन्ने की आपूर्ति उपलब्ध

दी गई। उन्होंने बताया कि वंदन व्यवहार आयु के आधार पर नहीं, बल्कि दीक्षा पर्याय के आधार पर निर्धारित होता है। प्रतिक्रमण व्यवहार कल्प के संबंध में उन्होंने कहा कि पाप लगा हो या नहीं, प्रतिक्रमण करना आवश्यक माना गया है, जबकि शेष 22 तीर्थंकरों के समय साधु पाप लगने पर प्रतिक्रमण करते थे। पर्युषण कल्प और चातुर्मास की परंपरा मास कल्प के अंतर्गत नौ कल्पी विहार की परंपरा की जानकारी देते हुए गुरुदेव ने बताया कि इसमें चातुर्मास का एक कल्प और प्रत्येक माह का एक कल्प मिलाकर नौ कल्प होते हैं। अंतिम पर्युषण कल्प में चातुर्मास एक ही स्थान पर करने का विधान बताया गया। उन्होंने कहा कि शेष 22 तीर्थंकरों के समय साधु वर्षा होने पर एक स्थान पर चातुर्मास करते थे और बारिश नहीं होने पर विहार करते थे। समकालीन जीवन के अतिचारों पर भी चर्चा गुरुदेव ने प्रवचन के दौरान वर्तमान समय में सामने आने वाले अतिचारों को

भी उदाहरणों के साथ समझाया। उन्होंने सोशल मीडिया के उपयोग, बाहर आने-जाने तथा भोजन से संबंधित अतिचारों का उल्लेख करते हुए श्रद्धालुओं को धार्मिक आचार-विचार के प्रति सजग रहने का संदेश दिया। बाफना परिवार ने कल्पसूत्र वोहराया कार्यक्रम से पूर्व मदनलाल, नीलेश कुमार एवं धीरज कुमार बाफना परिवार ने गुरुदेव श्री को कल्पसूत्र वोहराया और सकल संघ को कल्पसूत्र श्रवण करवाने का निवेदन किया। इससे पहले बाफना परिवार के निवास पर सकल चतुर्विध संघ की उपस्थिति में कल्पसूत्र जी को बाजे-गाजे के साथ ले जाया गया। लाभार्थी परिवारों द्वारा कल्पसूत्र जी की पांच ज्ञान पूजाएं की गईं और श्रुत ज्ञान के प्रति भक्ति अर्पित की गई। कार्यक्रम के दौरान शुक्रवार को विमलनाथ जिनालय के पालना जी को अपने घर ले जाकर भक्ति करवाने के लिए चढ़ावा बोलकर आदेश दिए जाने की जानकारी भी दी गई। समाचार प्रेषक: ललित डाकलिया, बेंगलुरु

जंग शुरू, जीत हमारी होगी : विजयेंद्र

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com
बेल्लारी, 10 सितंबर 2026। कर्नाटक भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष बी.वाई. विजयेंद्र ने कांग्रेस सरकार के खिलाफ राजनीतिक संघर्ष को अगले डेढ़ वर्ष तक लगातार जारी रखने का दावा करते हुए कहा कि जंग शुरू हो गई है और जंग के मैदान में जीत हमारी होगी। उन्होंने कहा कि भाजपा की दस दिवसीय बेल्लारी चलो पदयात्रा का चरण भले ही समाप्त हो रहा है, लेकिन राज्य सरकार के खिलाफ पार्टी का संघर्ष आगे भी जारी रहेगा। बेल्लारी शहर में श्री कनकदुर्गा देवी की पूजा-अर्चना के बाद पत्रकारों से बातचीत में विजयेंद्र ने कहा कि बेल्लारी चलो पदयात्रा का समापन के वल आंदोलन के एक चरण का अंत है। उन्होंने बताया कि गुरुवार शाम 4 बजे म्युनिसिपल ग्राउंड में समापन समारोह आयोजित किया जाएगा, जिसमें बड़ी संख्या में लोगों के शामिल होने की उम्मीद है। कांग्रेस सरकार के खिलाफ संघर्ष जारी रहेगा विजयेंद्र ने कहा कि भाजपा ने कांग्रेस सरकार की नीतियों और कथित जनविरोधी कार्यों के खिलाफ अपना संघर्ष शुरू कर दिया है। उनके अनुसार पदयात्रा के माध्यम से उत्तर कर्नाटक की समस्याओं और जनता से जुड़े मुद्दों को प्रमुखता से उठाया गया है। उन्होंने दावा को किया कि राज्य के लोगों में कांग्रेस सरकार के प्रति असंतोष बढ़ रहा है और जनता आगामी समय में सरकार को जवाब देने

का मन बना चुकी है। विजयेंद्र ने कहा कि भाजपा अगले डेढ़ वर्ष तक लगातार जनता के बीच जाकर सरकार की नीतियों को लेकर सवाल उठाएगी। सरकार पर लगाया जनहित की अनदेखी का आरोप भाजपा प्रदेश अध्यक्ष ने आरोप लगाया



कि कांग्रेस सरकार ने गरीबों, वंचित वर्गों, महिलाओं और दिहाड़ी मजदूरों के हित में अपेक्षित काम नहीं किया। उन्होंने उत्तर कर्नाटक की विभिन्न समस्याओं को लेकर भी सरकार पर गंभीरता नहीं दिखाने का आरोप लगाया। मुख्यमंत्री के कथित बयान का हवाला देते हुए विजयेंद्र ने सरकार की प्राथमिकताओं पर सवाल उठाया। उन्होंने उपमुख्यमंत्री डी.के. शिवकुमार पर भी निशाना साधते हुए आरोप लगाया कि राज्य के विकास के बजाय रियल एस्टेट से जुड़े हितों को अधिक महत्व दिया जा रहा है। हालांकि, ये आरोप भाजपा प्रदेश अध्यक्ष के राजनीतिक बयान हैं और कांग्रेस सरकार

विधानसभा में स्टालिन-विजय आमने-सामने, इशारे और MISA मुद्दे पर बढ़ा विवाद

भारतार्थ खबर संवाददाता अशोक कुमार सिंहभारतार्थ खबर Bhaarataarth.com

चेन्नई, 10 सितंबर 2026। तमिलनाडु की राजनीति में मुख्यमंत्री सी. जोसेफ विजय और डीएमके अध्यक्ष एम.के. स्टालिन के बीच विवाद अब विधानसभा की कार्यवाही से निकलकर राजनीतिक बहस का बड़ा मुद्दा बना गया है। MISA और आपातकाल के दौर से जुड़े संदर्भों पर विजय की टिप्पणी के बाद स्टालिन ने गुरुवार को तीखी प्रतिक्रिया दी। विवाद को शुरूआत विधानसभा में विजय द्वारा MISA का उल्लेख किए जाने और एक इशारा किए जाने के बाद हुई। इस इशारे को स्टालिन के 1976 के आपातकालीन हिरासत के दौरान जबड़े में लगी चोट से जोड़कर देखा गया।



बाद में विजय ने स्पष्ट किया था कि उनका इशारा जानबूझकर किसी को ठेस पहुंचाने के उद्देश्य से नहीं था। स्टालिन ने सुनाया आपातकाल का अनुभव स्टालिन ने अपनी प्रतिक्रिया में आपातकाल के दौरान मिरपत्तारी और जेल में कथित मारपीट का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि उस दौर का संघर्ष डीएमके के राजनीतिक इतिहास का हिस्सा है और इतिहास को बदला नहीं जा सकता। उन्होंने विजय को पुराने घटनाक्रम और रिकॉर्ड को पढ़ने की सलाह भी दी। विधानसभा की गरिमा पर भी सवाल स्टालिन ने आरोप लगाया कि विधानसभा को गंभीर जनहित के मुद्दों पर चर्चा का मंच होना चाहिए। उन्होंने विजय

पर सोशल मीडिया रीलस और प्रचार के जरिए प्रशासनिक मुद्दों से ध्यान हटाने का आरोप भी लगाया। दूसरी ओर, विजय के समर्थक पक्ष ने उनके विधानसभा में उठाए गए मुद्दों को राजनीतिक बहस का हिस्सा बताया है। इस विवाद के बीच तमिलनाडु विधानसभा में राजनीतिक टकराव भी देखने को मिला। इससे पहले विजय की टिप्पणियों को लेकर डीएमके विधायकों ने विरोध किया था और सदन में हंगामे की स्थिति बनी थी। फिलहाल विवाद का केंद्र केवल एक इशारा नहीं है, बल्कि आपातकाल का इतिहास, राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप और विधानसभा की गरिमा जैसे व्यापक मुद्दे बन गए हैं। आने वाले दिनों में यह मुद्दा तमिलनाडु की राजनीति में और चर्चा पैदा कर सकता है।

कि सरकार के पास उपलब्धियों के नाम पर कुछ नहीं है और जनता के बीच सरकार की स्वीकार्यता नहीं है। उन्होंने कांग्रेस सरकार को विज्ञापन वाली सरकार करार देते हुए आरोप लगाया कि सरकार अपनी उपलब्धियों का प्रचार करने पर अधिक जोर दे रही है। उनके अनुसार युवाओं के रोजगार, गरीबों और वंचित वर्गों की समस्याओं तथा जनकल्याण से जुड़े मुद्दों पर सरकार अपेक्षित परिणाम देने में विफल रही है। विजयेंद्र ने कहा कि केवल विज्ञापनों के माध्यम से जनता का विश्वास हासिल नहीं किया जा सकता। उन्होंने दावा किया कि आने वाले दिनों में जनता सरकार के कामकाज का जवाब राजनीतिक रूप से देगी। जनता ही देगी अंतिम फैसला बेल्लारी चलो पदयात्रा के समापन के साथ भाजपा ने राज्य में अपनी राजनीतिक गतिविधियों को और तेज करने के संकेत दिए हैं। विजयेंद्र के बयान से स्पष्ट है कि पार्टी आगामी समय में कांग्रेस सरकार को घेरने के लिए जनसभाओं, आंदोलनों और जनसंपर्क अभियानों पर जोर देने की तैयारी में है। वहीं, सरकार के कामकाज और उसके दावों का अंतिम आकलन जनता के अनुभव तथा उपलब्ध आंकड़ों के आधार पर ही किया जा सकेगा। फिलहाल बेल्लारी चलो के बाद कर्नाटक की राजनीति में सत्तापक्ष और विपक्ष के बीच टकराव और तेज होने के संकेत दिखाई दे रहे हैं।

मतदाता सूची पर मंथन: राजनीतिक दलों संग चुनाव अधिकारियों की बैठक

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com
बेंगलुरु, 10 सितंबर 2026। बेंगलुरु शहरी जिले में मतदाता सूची-2026 के विशेष व्यापक पुनरीक्षण को लेकर चुनाव प्रशासन ने राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों के साथ महत्वपूर्ण बैठक की। बैठक में मतदाता सूची के पुनरीक्षण के दौरान दावे और आपत्तियां दर्ज कराने से जुड़े अधिकारों तथा प्रक्रिया पर चर्चा की गई। जिला चुनाव अधिकारी एवं चीफ कमिशनर महेश्वर राव ने बैठक के बाद मीडिया को संबोधित करते हुए पुनरीक्षण प्रक्रिया से संबंधित जानकारी साझा की। उन्होंने बताया कि मतदाता सूची को अधिक व्यवस्थित और त्रुटिरहित बनाने के उद्देश्य से निर्धारित प्रक्रिया के तहत दावे एवं आपत्तियों पर विचार किया जा रहा है। बैठक में राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों की ओर से मतदाता सूची से जुड़े विभिन्न विषयों पर चर्चा की गई। चुनाव प्रशासन ने पुनरीक्षण प्रक्रिया में निर्धारित नियमों और प्रक्रियाओं के पालन पर जोर दिया। इस अवसर पर सेशनल कमिशनर सुषमा गोडाबोले, म्युनिसिपल कमिशनर पोम्माला सुनील कुमार, रमेश के.एन., एडिशनल डिस्ट्रिक्ट कमिशनर जगदीश नाइक, असिस्टेंट कमिशनर सहित संबंधित विभागों के अधिकारी मौजूद रहे। मतदाता सूची का पुनरीक्षण चुनावी प्रक्रिया का महत्वपूर्ण हिस्सा है। सूची में पात्र मतदाताओं का सही तरीके से समावेश और अपात्र अथवा त्रुटिपूर्ण प्रविष्टियों का नियमानुसार निराकरण निष्पक्ष एवं पारदर्शी चुनाव के लिए आवश्यक माना जाता है। राजनीतिक दलों के साथ संवाद को इसी प्रक्रिया का महत्वपूर्ण हिस्सा माना जा रहा है।

आईसीएमआर कार्यशाला में मुख कैंसर पर विशेषज्ञ व्याख्यान

दृष्टि में विषय पर विद्यार्थियों, शोधार्थियों और शिक्षकों को संबोधित किया। डॉ. होडा ने मुख कैंसर के प्रमुख कारणों, जोखिम कारकों, संभावित शुरूआती लक्षणों, बचाव, समय पर पहचान और उपचार से जुड़े महत्वपूर्ण पहलुओं पर जानकारी साझा की। उन्होंने कहा कि मुख कैंसर की पहचान शुरूआती चरण में होने और समय पर उपचार मिलने से रोगियों के उपचार परिणाम बेहतर होने की संभावना रहती है। उन्होंने संभावित लक्षणों को नजरअंदाज न करने और कैंसर के प्रति जागरूकता बढ़ाने की आवश्यकता पर भी जोर दिया। विशेषज्ञ ने चिकित्सा अनुसंधान और स्वास्थ्य सेवाओं में कृत्रिम बुद्धिमत्ता

(एआई), मशीन लर्निंग तथा आंकड़ा विश्लेषण की बढ़ती उपयोगिता पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि कंप्यूटर विज्ञान और अभियांत्रिकी के विद्यार्थी इन तकनीकों का उपयोग चिकित्सकीय चित्रों के विश्लेषण, रोग के जोखिम आकलन, पूवानुमान, निदान प्रणालियों और चिकित्सकीय निर्णय सहायता प्रणालियों के विकास में कर सकते हैं। कार्यशाला के माध्यम से विद्यार्थियों को चिकित्सा, जैव प्रौद्योगिकी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन लर्निंग और कंप्यूटर विज्ञान के बीच अंतर्विषयक सहयोग की संभावनाओं को समझने का अवसर मिला। कार्यक्रम का उद्देश्य तकनीकी शिक्षा को चिकित्सा अनुसंधान की वास्तविक चुनौतियों से जोड़ना तथा विद्यार्थियों और शोधार्थियों को स्वास्थ्य क्षेत्र में नवाचार एवं तकनीक आधारित समाधान विकसित करने के लिए प्रेरित करना रहा। सत्र के दौरान विद्यार्थियों और

बेंगलुरु, शुक्रवार , 11 सितम्बर 2026

प्रादेशिक समाचार

Bhaarataarth.com

4

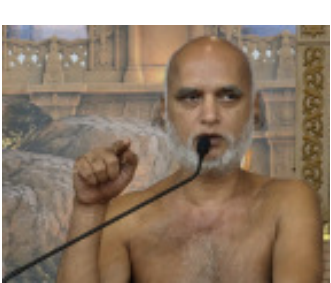
वीतरागता ही सच्चे आराध्य की पहचान

वीर सागर जी महाराज ने भगवान के स्वरूप, सम्यक् श्रद्धा और कर्म सिद्धांत पर किया विवेचन

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 10 सितंबर 2026। आत्म-सिल्कारिन् वषायीग-2026 के अंतर्गत आयोजित धर्मसभा में नियांपक श्रमण श्री 108 वीर सागर जी महाराज ने भगवान के स्वरूप को पहचानिए विषय पर प्रवचन दिया। आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज एवं आचार्य श्री सम्यसागर जी महाराज के मंगल आशीर्वाद से चल रहे आध्यात्मिक आयोजनों के क्रम में आयोजित धर्मसभा में महाराज श्री ने श्रद्धालुओं को सम्यक् श्रद्धा, वीतरागता, राग-द्वेष, कर्म सिद्धांत और जैन दर्शन में ब्रह्मांड की अवधारणा के विभिन्न पक्षों से अवगत कराया। महाराज श्री ने कहा कि भगवान के प्रति श्रद्धा तभी सार्थक है, जब साधक अपने आराध्य के वास्तविक स्वरूप और गुणों को समझे। उन्होंने कहा कि धर्म को समझने के लिए केवल परंपरा का अनुसरण पर्याप्त नहीं है, बल्कि विवेक और निष्पक्ष चिंतन भी आवश्यक है। गुणों से पहचाने जाते हैं वीतराग भगवान प्रवचन में महाराज श्री ने सामान्य मानवीय प्रवृत्तियों और वीतराग भगवान के स्वरूप के बीच अंतर स्पष्ट किया। उन्होंने कहा कि मनुष्य प्रायः क्रोध, मान, माया, लोभ, भय, चिंता, मोह, ईर्ष्या और आसक्ति जैसी भावनाओं से प्रभावित होता है। प्रशंसा से प्रसन्न और

निंदा से विचलित होना भी उसकी सामान्य मानसिक प्रवृत्ति हो सकती है। इसके विपरीत जैन दर्शन के अनुसार वीतराग भगवान राग-द्वेष, अहंकार, भय और स्वार्थ से रहित होते हैं। वे परम शांति, समता और निष्पक्षता के स्वरूप माने जाते हैं। महाराज श्री ने यह भी समझाया कि भगवान को केवल वीतद्वेषी



कहने के बजाय वीतराग कहना अधिक सार्थक है। उनके अनुसार द्वेष का त्याग अपेक्षाकृत सरल हो सकता है, लेकिन राग का अर्थात आसक्ति का पूर्ण श्रय अत्यंत कठिन है। किसी व्यक्ति, वस्तु अथवा परिस्थिति के प्रति मोह और आकर्षण समाप्त होने पर ही पूर्ण वीतरागता की दिशा में आगे बढ़ा जा सकता है। राग-द्वेष के संबंध को समझाया महाराज श्री ने कहा कि राग और द्वेष परस्पर जुड़े हुए हैं। जब किसी व्यक्ति या वस्तु को प्रति अत्यधिक आकर्षण पैदा होता है, तो उसके विपरीत परिस्थितियों या अन्य

व्यक्तियों के प्रति उपेक्षा अथवा द्वेष की संभावना भी बढ़ सकती है। इसलिए राग पर नियंत्रण प्राप्त करना आध्यात्मिक साधना का महत्वपूर्ण पक्ष है। उन्होंने श्रद्धालुओं को अपने भीतर मौजूद आसक्ति को पहचानने और धीरे-धीरे उससे ऊपर उठने का अभ्यास करने की प्रेरणा दी। धर्म में विवेकपूर्ण परीक्षण को महत्व धर्म, तर्क और प्रमाण से जुड़े प्रश्नों का उत्तर देते हुए महाराज श्री ने कहा कि धार्मिक सत्य को समझने के लिए संप्रदायगत आग्रहों से ऊपर उठकर निष्पक्ष दृष्टि से विचार करना चाहिए। उन्होंने न्यायाधीश का उदाहरण देते हुए कहा कि न्यायाधीश के निर्णय की विश्वसनीयता उसकी निष्पक्षता पर निर्भर करती है। यदि वह लोभ, भय या निजी स्वार्थ से प्रभावित होकर निर्णय करे, तो उसके निर्णय की प्रामाणिकता पर सवाल उठना स्वाभाविक है। इसी प्रकार जैन दर्शन में वीतराग और सर्वज्ञ तीर्थंकरों की वाणी को प्रमाणभूत मानने के पीछेउनकेराग, द्वेष, स्वार्थ और पक्षपात से मुक्त होने की अवधारणा महत्वपूर्ण है। सृष्टि की उत्पत्ति पर जैन दर्शन का दृष्टिकोण धर्मसभा में संसार की उत्पत्ति से जुड़े प्रश्न पर भी महाराज श्री ने जैन दर्शन की अवधारणा प्रस्तुत की। उन्होंने बताया कि जैन दर्शन संसार को अनादि-अनंत मानता है और जीव तथा पुद्गल जैसे द्रव्यों को किसी एक समय में निर्मित किया हुआ नहीं मानता।

उन्होंने कर्म सिद्धांत को समझाते हुए कहा कि जीव अपने भावों और कर्मों के परिणामों का अनुभव करता है।इस दृष्टिकोण में सुख-दुःख के लिए किसी बाहरी सत्ता को जिम्मेदार ठहराने के बजाय व्यक्ति को अपने कर्मों और आंतरिक प्रवृत्तियों की ओर देखने की प्रेरणा दी जाती है। भगवान की भूमिका को स्पष्ट करने के लिए उन्होंने सूर्य और नदी के उदाहरण दिए। उनके अनुसार सूर्य सभी को समान रूप से प्रकाश देता है और नदी अपने प्रवाह में किसी के प्रति पक्षपात नहीं करती। इसी प्रकार वीतराग भगवान को जैन दर्शन में किसी जीव के कर्मफल को पक्षपातपूर्वक बदलने वाला नहीं माना जाता।उनका उपदेश जीव को अपने वास्तविक स्वरूप की पहचान और मुक्ति के मार्ग की ओर प्रेरित करता है। आसक्ति से मुक्ति की दिशा में साधना महाराज श्री ने कहा कि संसार की अनेक मानसिक परेशानियों की जड़ राग और आसक्ति में देखी जा सकती है। जिस वस्तु या व्यक्ति को मनुष्य मेरा मानता है, उसके प्रति मोह बढ़ने पर उसे खोने का भय भी उत्पन्न हो सकता है। इससे चिंता, क्रोध और द्वेष जैसी भावनाएं जन्म ले सकती हैं। उन्होंने कहा कि आध्यात्मिक साधना केवल बाहरी पूजा-पद्धति तक सीमित नहीं होनी चाहिए। साधक को अपने भीतर वह देखने का प्रयास करना चाहिए कि वह किन

वस्तुओं, व्यक्तियों और परिस्थितियों के प्रति अत्यधिक आसक्त है। आसक्ति को कम करना, परिस्थितियों में समता बनाए रखना और सभी जीवों के प्रति करुणा का भाव विकसित करना आध्यात्मिक उन्नति की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं। समता और करुणा का संदेश प्रवचन के दौरान श्रद्धालुओं से अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियों में मानसिक संतुलन बनाए रखने का आान किया गया। महाराज श्री ने लाभ-हानि, सुख-दुःख तथा प्रशंसा-निंदा जैसी परिस्थितियों में मन को अत्यधिक प्रभावित होने से बचाने को समता की साधना बताया। उन्होंने कहा कि सच्चे आराध्य की पहचान बाहरी स्वरूप से अधिक उनके गुणों से होती है। वीतरागता, सर्वज्ञता, निष्पक्षता और परम शांति को आराध्य के प्रमुख गुणों के रूप में समझाते हुए उन्होंने श्रद्धालुओं को इन गुणों को अपने जीवन में विकसित करने का प्रयास करने की प्रेरणा दी।धर्मसभा में उपस्थित श्रद्धालुओं ने प्रवचन को ध्यानपूर्वक सुना। आयोजन के माध्यम से सम्यक् श्रद्धा को विवेक, आराध्य के वास्तविक स्वरूप की समझ और आत्मचिंतन से जोड़ने का संदेश दिया गया। समाचार प्रेषक: विपिन कुमार जैन, बेंगलुरु

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

बैंगलोर, 10 सितंबर 2026।बैंगलोर साउथ म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन की सीमा में शहर को कचरा-मुक्त और स्वच्छ बनाने के उद्देश्य से चलाया गया विशेष फ्रीडम 15,590 टन कचरा साफ, फ्रीडम फ्रॉम वेस्ट अभियान सफल

वंदे मातरम पर INDIA में तकरार, अब्दुल्ला पिता-पुत्र ने कांग्रेस को घेरा

आचरण को लेकर सवाल उठने लगे हैं। कांग्रेस कार्यसमिति ने 19 अगस्त 2026 को पार्टी के कार्यक्रमों में वंदे मातरम् के केवल पहले दो अंते गाने का निर्णय लिया था और इसके लिए 1937 के कांग्रेस के फैसले का संदर्भ दिया



था। हालांकि, नेशनल कॉन्ग्रेस नेता तनवीर सादिक ने कांग्रेस के ही कुछ नेताओं के ऐसे सार्वजनिक कार्यक्रमों के वाीडियो साझा किए, जिनमें पूर्ण वंदे मातरम् के दौरान वे सम्मानपूर्वक खड़े दिखाई दिए। इनमें तेलंगाना के मुख्यमंत्री ए. रेवंत रेड्डी और कर्नाटक के उपमुख्यमंत्री डॉके शिवकुमार से जुड़े कार्यक्रमों का उल्लेख किया गया। सादिक ने जम्मू-कश्मीर कांग्रेस अध्यक्ष तारिक हाफिज करां से सवाल किया कि यदि पार्टी की नीति पूर्ण संस्करण को लेकर अलग रुख रखती है, तो कांग्रेस के अपने

फेरे विशेष सफाई अभियान में कुल 357 वाहनों को लगाया गया। इन वाहनों ने विभिन्न क्षेत्रों में कुल 672 फेरे लगाकर जमा कचरे को हटाया और निर्धारित निस्तारण एवं प्रसंस्करण के द्रोों तक पहुंचाया। निगम के अनुसार अभियान

अवधि में प्रतिदिन अलग-अलग क्षेत्रों में सफाई अभियान चलाया गया, जिससे सड़क किनारे और अन्य स्थानों पर जमा कचरे को हटाने में मदद मिली। विटासंद्रा और कल्लूबालू भेजा गया कचरा अभियान के तहत एकत्र किए गए कुल 15,590.42 मीट्रिक टन कचरे में से 15,575.42 मीट्रिक टन कचरा विटासंद्रा स्थित प्रसंस्करण एवं वैज्ञानिक निस्तारण केंद्र भेजा गया। वहीं 15 मीट्रिक टन कचरा अनेकल के निकट कल्लुबालू भेजा गया। निगम ने कचरे के वैज्ञानिक निस्तारण और प्रसंस्करण के लिए निर्धारित केंद्रों तक

परिवहन की व्यवस्था की। 21 अगस्त को एक दिन में 1,117.42 टन कचरा हटाया अभियान के दौरान 21 अगस्त को सबसे बड़े दैनिक अभियानों में से एक चलाया गया। इस दिन 118 वाहनों ने कुल 48 फेरे लगाए और 1,117.42 मीट्रिक टन कचरा हटाया गया। इसी क्रम में 25 अगस्त को 1,051.43 मीट्रिक टन कचरा हटाया गया। वहीं स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त को 17 वाहनों ने 37 फेरे लगाकर 873.9 मीट्रिक टन कचरे को निस्तारण किया। आयुक्त ने नागरिकों से सहयोग की अपील की निगम आयुक्त ए.एन. रमेश ने कहा कि अभियान के माध्यम से

शहर में कचरे के कई बड़े ढेर हटाए गए हैं। उन्होंने नागरिकों से अपील की कि सड़क किनारे, खाली भूखंडों या सार्वजनिक स्थानों पर कचरा नहीं फेंके। उन्होंने नागरिकों से कचरा निगम की अधिकृत वाहनों को सौंपने और शहर की स्वच्छता व्यवस्था में सहयोग करने का आग्रह किया। आयुक्त ने नागरिकों की सक्रिय भागीदारी से ही बैंगलोर साउथ को स्वच्छ और आदर्श स्वच्छ क्षेत्र के रूप में विकसित किया जा सकता है।

उज्जैन में खड़े हनुमान पर विवाद गहराया, साध्वी बोलीं—मंदिर यहीं बने

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

उज्जैन, 10 सितंबर 2026। उज्जैन के प्रसिद्ध खड़े हनुमान मंदिर को स्थानांतरित किए जाने को लेकर विवाद अब संत समाज तक पहुंच गया है। मंदिर को हटाने के विरोध में साध्वी ब्रह्मदेव गिरी ने मंदिर परिसर पहुंचकर बटुकों और संतों के साथ हनुमान चालीसा का पाठ किया। इसके बाद उन्होंने मंदिर को अन्यत्र ले जाने की किसी भी कोशिश का विरोध करते हुए संत समाज से एकजुट होकर सामने आने की अपील की। मंदिर परिसर में गड़ौं और मशीनों के इस्तेमाल पर सवाल साध्वी हषानंद गिरी ने दावा किया कि प्रतिमा को दोनों ओर करीब सात फीट गहरे गड्ढे दिखाई दे रहे हैं। उन्होंने सवाल उठाया कि इतने गहरे गड्ढे किसी जानवर द्वारा नहीं खोदे जा सकते और आरोप लगाया कि प्रतिमा को स्थानांतरित करने के प्रयास में भारी मशीनरी का इस्तेमाल किया गया। उन्होंने कहा कि सरकार की ओर से प्रतिमा को सुरक्षित रखने के प्रयास का वे सम्मान करती हैं, लेकिन पहले किए गए प्रयास सफल नहीं हुए हैं। ऐसे में अब प्रतिमा को

हटाने का कोई नया प्रयास नहीं किया जाना चाहिए। छोटा अक्मटर मानते हैं श्रद्धालु साध्वी ने कहा कि खड़े हनुमान जी का दरबार श्रद्धालुओं के लिए विशेष आस्था



का केंद्र है। उन्होंने कहा कि अनेक श्रद्धालु इसे छोटा अक्मटर मानते हैं और हनुमान जी की वैद्य रूप में आराधना करते हैं। उनका कहना था कि देश के विभिन्न हिस्सों से लोग यहां धार्मिक आस्था और उपचार संबंधी मान्यताओं के कारण पहुंचते हैं। उन्होंने प्रशासन से धार्मिक स्थलों को लेकर श्रद्धालुओं की भावनाओं और आस्था का सम्मान करने की अपील की।

तो आने वाले समय में धार्मिक स्थलों के संरक्षण को लेकर गंभीर चुनौतियां खड़ी हो सकती हैं। उन्होंने मंदिर के श्रद्धालुओं को टैट में दर्शन करने की स्थिति को भी चिंता का विषय बताया। मांग–प्रतिमा न हटे, उसी स्थान पर बने भव्य मंदिर साध्वी हषानंद गिरी ने स्पष्ट किया कि उनका उद्देश्य सरकार के विकास कार्यों का विरोध करना नहीं है। उनका मुख्य मांग है कि खड़े हनुमान जी की प्रतिमा को मौजूदा स्थान से हटाने की कोशिश बंद की जाए और उसी स्थान पर भव्य मंदिर का निर्माण किया जाए। उन्होंने प्रशासन और सरकार से श्रद्धालुओं की धार्मिक भावनाओं को ध्यान में रखते हुए समाधान निकालने की अपील की। साथ ही कहा कि उज्जैन में इस धार्मिक स्थल को लेकर ऐसा लंबा गतिविध नहीं होना चाहिए, जैसा तथा मंदिर के मुद्दे पर खुलकर सामने आने का आान किया। उन्होंने कहा कि कई संत और महामंडलेश्वर मंदिर में दर्शन के लिए पहुंचे, लेकिन इस विषय पर अपेक्षित रूप से मुखर नहीं हुए। उन्होंने कहा कि यदि संत समाज धार्मिक आस्था से जुड़े ऐसे मामलों में एकजुट होकर अपनी बात नहीं रखेगा,

अपील हषानंद गिरी ने संत समाज से मदों, अखाड़ों और गढ़ियों तक सीमित न रहने तथा मंदिर के मुद्दे पर खुलकर सामने आने का आान किया। उन्होंने कहा कि कई संत और महामंडलेश्वर मंदिर में दर्शन के लिए पहुंचे, लेकिन इस विषय पर अपेक्षित रूप से मुखर नहीं हुए। उन्होंने कहा कि यदि संत समाज धार्मिक आस्था से जुड़े ऐसे मामलों में एकजुट होकर अपनी बात नहीं रखेगा,

मुंबई–गोवा हाईवे की देरी पर गडकरी नाराज, उद्घाटन में शामिल नहीं होंगे

भारतार्थ खबर संवाददाता अशोक कुमार सिंह (Bhaarataarth.com) पणजी, 10 सितंबर 2026। मुंबई–गोवा हाईवे के लंबे समय से चल रहे चौड़ीकरण कार्य में देरी को लेकर केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने कड़ी नाराजगी जताई है। उन्होंने कहा कि परियोजना में हुई देरी से वह बेहद असंतुष्ट हैं और हाईवे के पूरा होने के बाद होने वाले उद्घाटन कार्यक्रम में शामिल नहीं होंगे। गडकरी ने यह बात गोवा के पोरवोरिम में छह लेन वाले एलिवेटेड कॉरिडोर के उद्घाटन कार्यक्रम के दौरान कही। उन्होंने बताया कि मुंबई–गोवा हाईवे के काम की प्रगति को लेकर अधिकारियों के साथ बैठक भी हुई हैं। अक्टूबर में खुद करीे हाईवे का निरीक्षण के केंद्रीय मंत्री ने कहा कि वह अक्टूबर में मुंबई पहुंचने के बाद सड़क मार्ग से गोवा जाएंगे और इस दौरान मुंबई–गोवा हाईवे की स्थिति का खुद जायजा लेंगे। उनका उद्देश्य यह देखना है कि यात्रियों के लिए सड़क यात्रा कितनी सुविधाजनक हुई है और परियोजना का काम किस स्थिति में है। ठेकेदारों और अधिकारियों पर कार्रवाई का संकेत गडकरी ने परियोजनाओं में देरी और खराब गुणवत्ता वाले निर्माण कार्यों को लेकर जिम्मेदार ठेकेदारों और अधिकारियों पर सख्त कार्रवाई की बात कही। उन्होंने कहा कि लापरवाही करने वाले ठेकेदारों को ब्लैकलिस्ट करने और जिम्मेदार अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। मुंबई–गोवा हाईवे का चौड़ीकरण लंबे समय से चल रहा है और परियोजना में कई बार देरी हो चुकी है। ताजा बयान से यह स्पष्ट है कि सरकार अब परियोजना की प्रगति और निर्माण गुणवत्ता को लेकर जवाबदेही तय करने पर जोर दे रही है। इसी बीच गोवा के पोरवोरिम में करीब 5.15 किलोमीटर लंबे छह लेन के एलिवेटेड कॉरिडोर का उद्घाटन किया गया है। इस परियोजना का उद्देश्य क्षेत्र में यातायात दबाव कम करना और आवागमन को सुगम बनाना है।

कांग्रेस का पलटवार: एऊ कार्रवाई से नहीं झुकेंगे

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 10 सितंबर 2026। कांग्रेस ने केंद्र की भाजपा सरकार पर राजनीतिक विरोधियों के खिलाफ केेंद्रीय जांच एजेंसियों के कथित दुरुपयोग का आरोप लगाते हुए कहा है कि ऐसी कार्रवाई से पार्टी कन्नड़ जनता की सेवा के अपने संकल्प से पीछे नहीं हटेगी। कर्नाटक कांग्रेस ने अनुसूचित जनजाति (ST) नेता सतीश जारकीहोली के खिलाफ राजनीतिक हमलों और प्रवर्तन निदेशालय (एऊ) की कार्रवाई को भी इसी आरोप से जोड़ते हुए भाजपा पर निशाना साधा है। सतीश जारकीहोली के समर्थन में कांग्रेस का बयान कांग्रेस की ओर से जारी बयान में कहा गया कि सतीश जारकीहोली जैसे प्रभावशाली ST नेता को निशाना बनाना भाजपा की कथित बदले की राजनीति का उदाहरण है। पार्टी ने आरोप लगाया कि आगामी राजनीतिक चुनौतियों और हार के डर के कारण भाजपा विपक्षी नेताओं पर दबाव बनाने को कोशिश कर रही है। हालांकि, बयान में लगाए गए आरोप कांग्रेस का राजनीतिक पक्ष है। संबंधित जांच एजेंसियों की कार्रवाई के आधार, कानूनी स्थिति और

आरोपों पर अंतिम निष्कर्ष संबंधित आधिकारिक रिकॉर्ड तथा न्यायिक प्रक्रिया से ही तय होंगे। कई नेताओं पर कार्रवाई का दावा कर्नाटक कांग्रेस ने पिछले तीन वर्षों के दौरान अपने कई नेताओं के खिलाफ एऊकी कार्रवाई का उल्लेख करते हुए इसे राजनीतिक प्रतिशोध का हिस्सा बताया। पार्टी के अनुसार, इनमें मुख्यमंत्री डी.के. शिवकुमार, उनके भाई एवं पूर्व सांसद डी.के. सुरेश, पूर्व मुख्यमंत्री सिद्धार मैया, उपमुख्यमंत्री जी. परमेश्वर, मंत्री बी.जेड. जमोर् अहमद निदेशालय (एऊ) की कार्रवाई को भी इसी आरोप से जोड़ते हुए भाजपा पर निशाना साधा है। सतीश जारकीहोली के समर्थन में कांग्रेस का बयान कांग्रेस की ओर से जारी बयान में कहा गया कि सतीश जारकीहोली जैसे प्रभावशाली ST नेता को निशाना बनाना भाजपा की कथित बदले की राजनीति का उदाहरण है। पार्टी ने आरोप लगाया कि आगामी राजनीतिक चुनौतियों और हार के डर के कारण भाजपा विपक्षी नेताओं पर दबाव बनाने को कोशिश कर रही है। हालांकि, बयान में लगाए गए आरोप कांग्रेस का राजनीतिक पक्ष है। संबंधित जांच एजेंसियों की कार्रवाई के आधार, कानूनी स्थिति और

पर संबंधित पक्षों की प्रतिक्रिया और मामलों की वर्तमान कानूनी स्थिति स्पष्ट होने के बाद ही निष्पक्ष निष्कर्ष निकाला जा सकता है। किसी भी व्यक्ति के खिलाफ जांच या अभियोजन की स्थिति को दोषसिद्ध नहीं माना जा सकता। गारंटी योजनाओं पर काम जारी रहेगा कर्नाटक कांग्रेस ने कहा कि केेंद्रीय एजेंसियों की कार्रवाई और राजनीतिक हमलों के बावजूद पार्टी न तो झुकेंगी और न ही डरेगी। बयान में कहा गया कि कांग्रेस राज्य में अपनी गारंटी योजनाओं को लागू करने और जनसेवा के कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है। पार्टी ने भाजपा को चुनौती देते हुए कहा कि कांग्रेस जनता के मुद्दों पर काम करती रहेगी और राजनीतिक दबाव के बावजूद अपने संगठनात्मक तथा जनकल्याणकारी कार्यक्रमों को जारी रखेगी। निष्पक्षता और जवाबदेही जरूरी केेंद्रीय जांच एजेंसियों को कार्रवाई को लेकर राजनीतिक दलों के बीच आरोप-प्रत्यारोप लंबे समय से जारी हैं। ऐसे मामलों में जांच की स्वतंत्रता, पारदर्शिता और सभी पक्षों को समान अवसर मिलना लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए आवश्यक है। आरोपों की वास्तविकता का निर्धारण जांच, साक्ष्यों और न्यायिक प्रक्रिया के आधार पर होना चाहिए, न कि केवल राजनीतिक बयानों के आधार पर।